1

शिक्षा के साथ आज़ादी -करे सपने साकार बच्चियों के

किरण देवेंद्र*

आज अधिकांश अभिभावक अपनी बेटियों को पढ़ने के लिए स्कूल तो भेजते हैं, पर उन्हें आज़ादी नहीं देते। शिक्षित परिवारों में भी बेटियों पर अनेक प्रकार की बंदिशें लगाई जाती हैं। बेटियों को भी शिक्षा के साथ आज़ादी मिले तो पूर्ण आत्मविश्वास के साथ, मुक्त होकर स्वयं कुछ करने, कार्यों में अगुवाई करने तथा स्वतंत्र निर्णय लेने जैसी क्षमताएँ विकसित होते देर नहीं लगती। प्रस्तुत लेख इसी प्रकार के अनुभव पर आधारित है।

शिक्षा बच्चियों में आसमान छू लेने के सपने साकार कर सकती है। यह मेरा अपना अनुभव है। 4-5 वर्ष की आयु से ही मेरे मम्मी-पापा ने मुझे अपने दो छोटे भाइयों के साथ वह सब कुछ करने दिया जो वे करते थे। हम तीनों मिलकर बनाते बर्फ़ के बुत, फिसलते स्लेज पर बैठकर बर्फ़ पर, रात को नीले आसमान पर तारे देख खुश तथा अचंभित होते और कहानियाँ सुनते या सुनाते। सुबह उठते ही बर्फ़ पड़ी देखकर खुश होते थे। मेरे दादा-दादी कसौली में रहते थे। यदि मेरी इच्छा होती कि उनसे बात करुँ तो मुझे मेरे पापा कहते कि फोन पर ट्रंक कॉल बुक करो और बात करो। यदि मेरा मिलने का मन होता तो वे मुझे बस में बिठा देते और कसौली में मेरे दादा जी मुझे बस से उतार लेते। ये दोनों काम मैंने तीसरी-चौथी कक्षा से ही किए। ऐसी थी, यह कुछ करने की आज़ादी कि मुझे यह समझ आने लगा था कि मैं बच्ची होकर अपनी इच्छा पूरी कर सकती हूँ। ''मैं सक्षम हूँ,'' यह अहसास लगातार आता रहा मुझ में। इसी समय मेरे पापा मेरे लिए मैरी क्यूरी की जीवनकथा लाए। उसे पढ़कर मेरे आत्मविश्वास को दृढ़ता मिली। तिरेपन वर्ष बाद भी मैं मैरी क्यूरी के जीवन से बहुत कुछ सीखने की कोशिश करती हूँ। मैं स्कूल में खेलों, नाटकों और वादविवाद में भाग लेती थी। मैं पढ़ाई में ठीक ही थी। गणित न आने की वज़ह से मैं बहुत अच्छे अंक नहीं प्राप्त कर पाई। हमारे एक नज़दीकी रिश्तेदार ने पापा से कहा की बहुत शर्म की बात है कि किरण एक ऐसे परदादा की परपोती है, जो पत्थर को भी गणित सिखा सकते थे और इसे गणित में पास

* प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

होना ही मुश्किल लगता है। इस पर पापा बहुत नाराज़ हुए और कहा कि न मैं आपके बच्चों पर टिप्पणी करता हूँ और आप भी न करें। किरण अपने-आप कुछ रास्ता निकाल लेगी।

गणित नहीं आने पर मुझे कभी शर्मिंदा नहीं होना पड़ा। हम इस सोच के साथ बड़े हुए कि किसी ज़रूरतमंद के काम कैसे आएँ और अस्पताल में जाकर मरीज़ों की मदद कैसे करें। हमारे घर में यह भी शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा माना जाता था। हमारे आने-जाने पर रोक नहीं थी, परंतु मम्मी को यह पता होना चाहिए था कि हम कहाँ हैं और किस समय तक घर लौटेंगे।

हमारे यहाँ जो व्यवहार मेरे दोनों भाइयों के साथ किया जाता था, वही मेरे साथ भी। किसी तरह का भेदभाव नहीं था। जब हम अपने एक रिश्तेदार के घर उनसे मिलने गए तो पापा हम तीनों भाई-बहनों को अपने साथ लेकर उनके मजिस्ट्रेट मित्र को मिलने के लिए ले जाने लगे, तो हमारी रिश्तेदार कहने लगीं, 'किरण को यहीं छोड़ दें। यह कोर्ट में जाएगी क्या? पापा को गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा कि यह ज़रूर जाएगी। मेरे भाई भी मुझे आज वही एहसास दिलाते हैं। जब मेरी बुआ के निधन पर मैं गई तो वहाँ बैठक में सभी आदमी बैठे थे। मेरे दोनों भाइयों ने मुझे आगे किया। इस प्रकार हमारे मम्मी-पापा ने हम तीनों भाई-बहनों पर अटूट विश्वास रखा। मैं इस बात पर ज़ोर इसलिए दे रही हूँ, क्योंकि उस ज़माने में अधिकांश बच्चियाँ बंदिशों के साथ ही घरों में रहती थीं और स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करती थीं। सौभाग्यवश मेरे पति तथा उनके परिवार ने भी मुझे बहुत आज़ादी दी। इससे मुझे अपने काम की वज़ह से बार-बार देश में और कभी-कभी विदेश जाने में कोई परेशानी नहीं हुई। मेरे सास-ससुर शिक्षा के महत्त्व को आजीवन मानते रहे और मुझे बंदिशों से मुक्त रखा। मेरे पति का पल-पल का सहयोग मेरी किसी भी कठिनाई को सरल बना देता है।

मुझे यह विश्वास है कि यदि आज भी हम बच्चियों को स्कूल भेजें तथा योग्यता के अनुसार हर बच्ची को उच्च शिक्षा अथवा शिक्षा ग्रहण करने के अवसर दें, तो हर बच्ची में छिपी हुई इच्छा पंख ले उसे आसमान छूने देगी। हमारे देश में ऐसी बच्चियों के हज़ारों उदाहरण हैं जो सीमित साधनों के बावजूद उन ऊँचाइयों को छू पाईं, जिनकी कल्पना उनके परिवारों ने कभी नहीं की थी।

आज के संदर्भ में अधिकतर परिवार बच्चियों को पढ़ाते हैं, पर उन्हें सपने साकार करने की आज़ादी नहीं दे पाते। वे चाहते हैं कि लड़कियाँ वही सब करें जो उनके माता-पिता चाहते हैं। यदि पैसों का अभाव हो तो उच्च शिक्षा के लिए वे लड़कों को ही प्राथमिकता देते हैं। समाज के बहुत-से व्यक्ति अपने विचारों में इतने संकुचित हैं कि अपने या अपने परिवार के अलावा उन्हें यह चिंता ही नहीं रहती है कि उनके आस-पास क्या हो रहा है? यदि हमारे समाज का हर व्यक्ति अपने या अपने परिवार से ऊपर उठ पाता, तो क्या वह दहेज़ के लिए इतनी अधिक महिलाओं का उत्पीड़न और मृत्यु बर्दाश्त करता? यह कैसे सहन कर रहा है

हमारा समाज कि समृद्ध और गरीब परिवार अपनी बच्चियों के जीने और मरने के फैसले स्वयं करें?

शिक्षा के द्वारा समाज में जागृति लाई जा सकेगी। बालिकाओं में, महिलाओं में, पुरुषों में, बालकों में- पूरे समाज में जागृति होगी तो शिक्षित बच्चियाँ, महिलाएँ पूरे देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास में योगदान दें सकेंगी- उन्हें प्यार और आज़ादी के साथ जीवन और शिक्षा, दें।

शिक्षा ज़रूरी है, हर बच्चे तथा बच्ची के लिए। 6-14 वर्ष के बच्चों का यह मौलिक अधिकार है। मुझे चिंता है उन अनेकानेक बच्चियों की, जिनका जन्म लेने का अधिकार ही उनके माता-पिता तथा समाज मिलकर छीन लेता है। शिक्षक होने के नाते आप इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाएँ। आप खुद ही सोचिए आनेवाला भारत कैसा होगा, यदि बच्चियाँ जन्म ही नहीं ले पाएँगी! इसके लिए आप एक आंदोलन शुरू करें और उसका हिस्सा बनें।

❑❑❑